एक थी बिट्टी एक था बिट्टू
कहानीः पारुल बत्रा
एकलव्य का प्रकाशन
चित्रः शिवेन्द्र पाण्डिया

छोटे भाई गगन के लिए

एक थी बिट्टी एक था बिट्टू
EKTHIBITTI EKTHABITTU

कहानी: पारुल बत्रा
चित्रांकन: शिवेन्द्र पाण्डिया

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़: 100 gsm मेपलिथो एवं 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-89976-99-6
मूल्य: ₹ 40.00

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल, फोन: (0755) 255 0291

एक थी बिट्टी
एक था बिट्टू
कहानी: पारुल बत्रा
चित्र: शिवेन्द्र पाण्डिया
एकलव्य का प्रकाशन

यह नटखट बिट्टी है।

यह चंचल बिट्टू है।

बिट्टी छह बरस की है।

बिट्टू पाँच बरस का है।

बिट्टी, बिट्टू के पड़ोस में रहती है।

बिट्टू, बिट्टी के पड़ोस में रहता है।

बिट्टी की बिट्टू से दोस्ती पक्की है।

बिट्टू की बिट्टी से दोस्ती पक्की है।

एक दिन बिट्टी चली बिट्टू से मिलने।
बीच रास्ते में नटखट बिट्टी ने कागज़ की पतंग उड़ाई।

बिट्टू चला बिट्टी से मिलने।
बीच रास्ते में चंचल बिट्टू ने कागज़ की नाव तैराई।

रास्ते में बिट्टी मिली बिट्टू से...

...और बिट्टू मिला बिट्टी से।
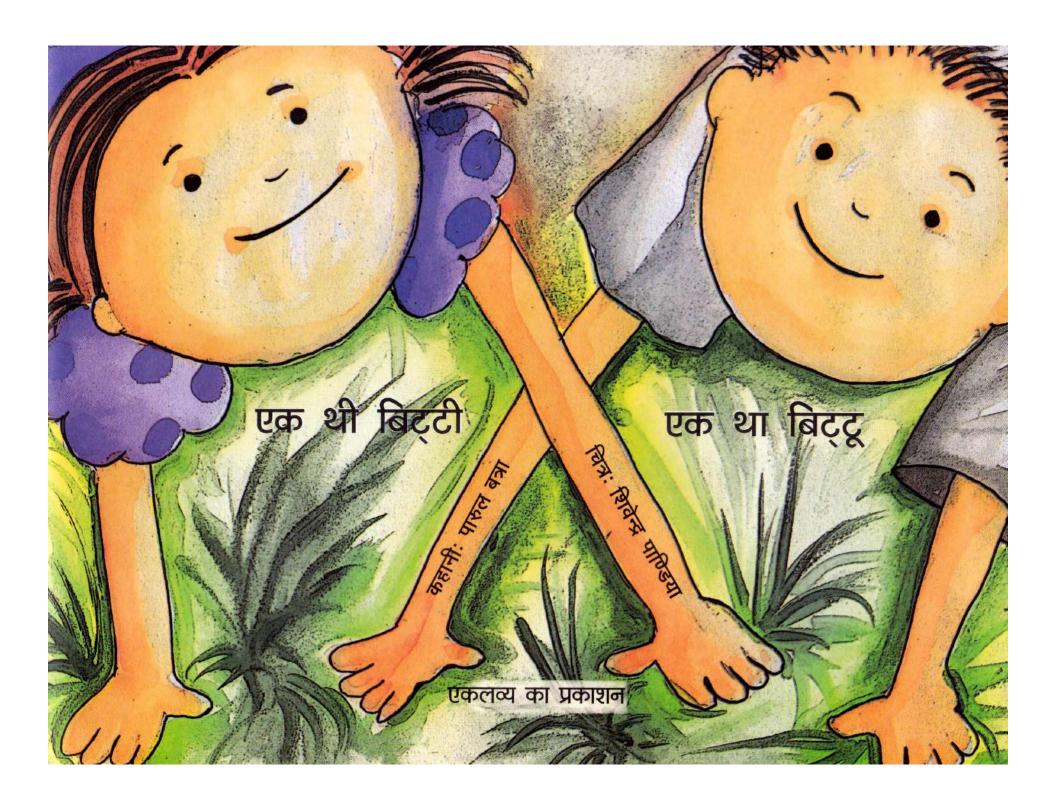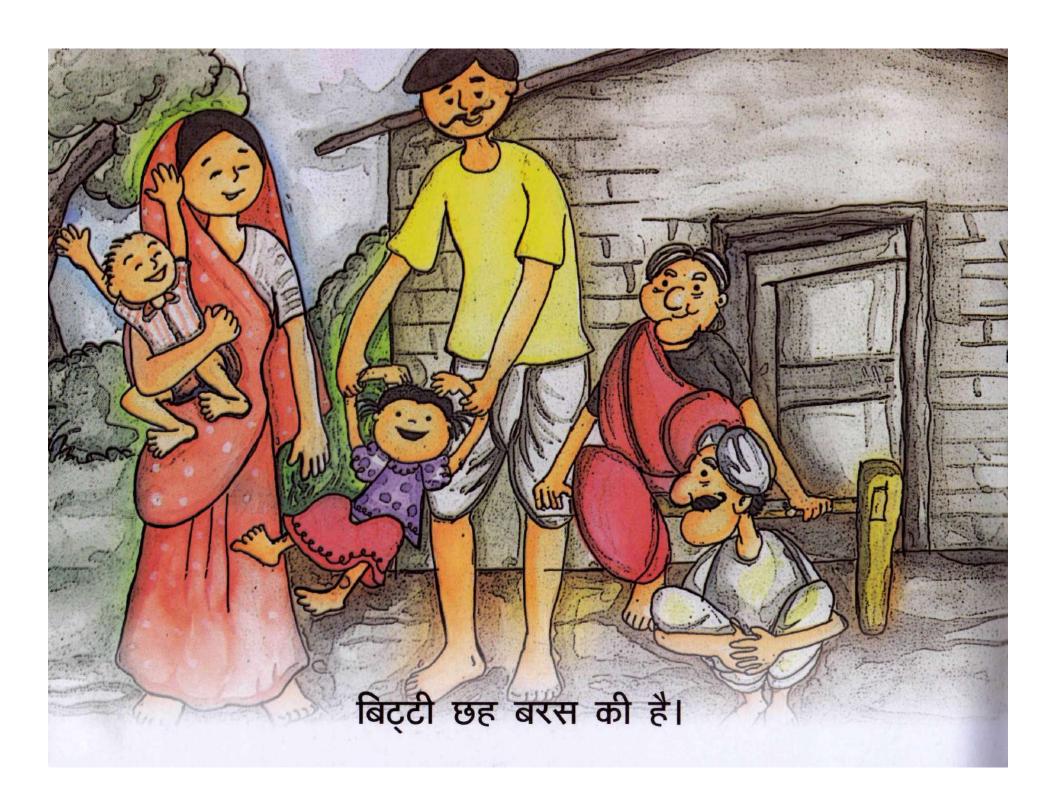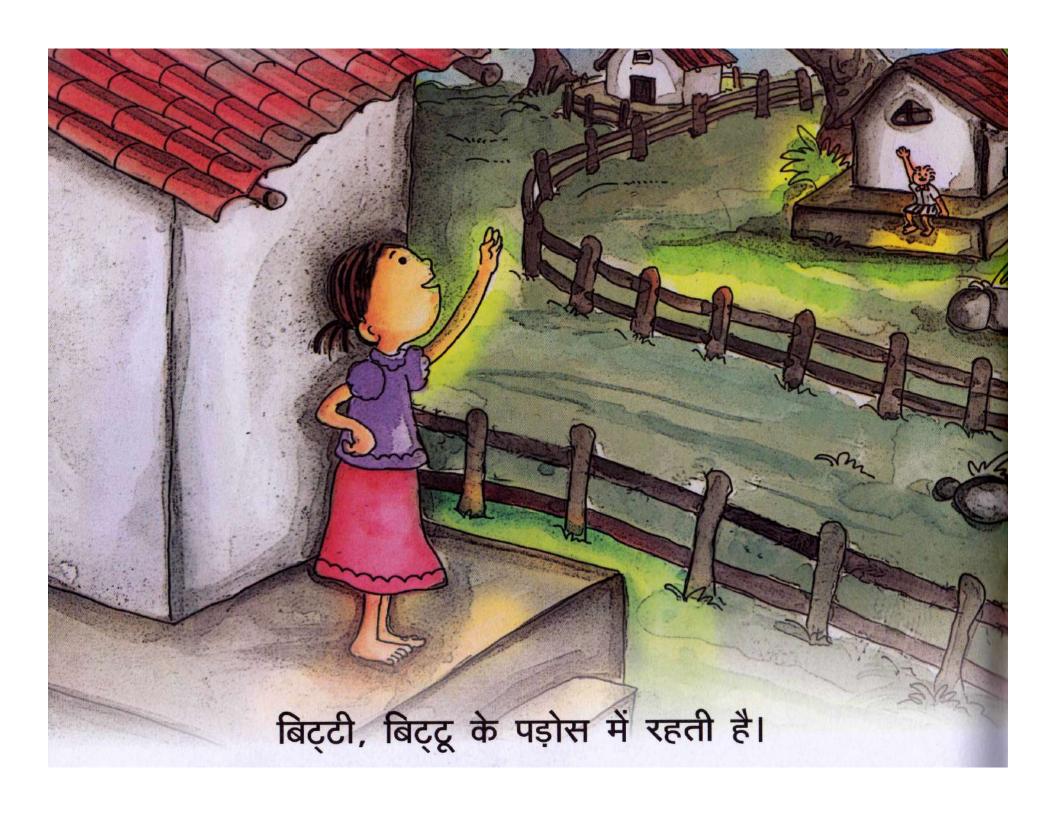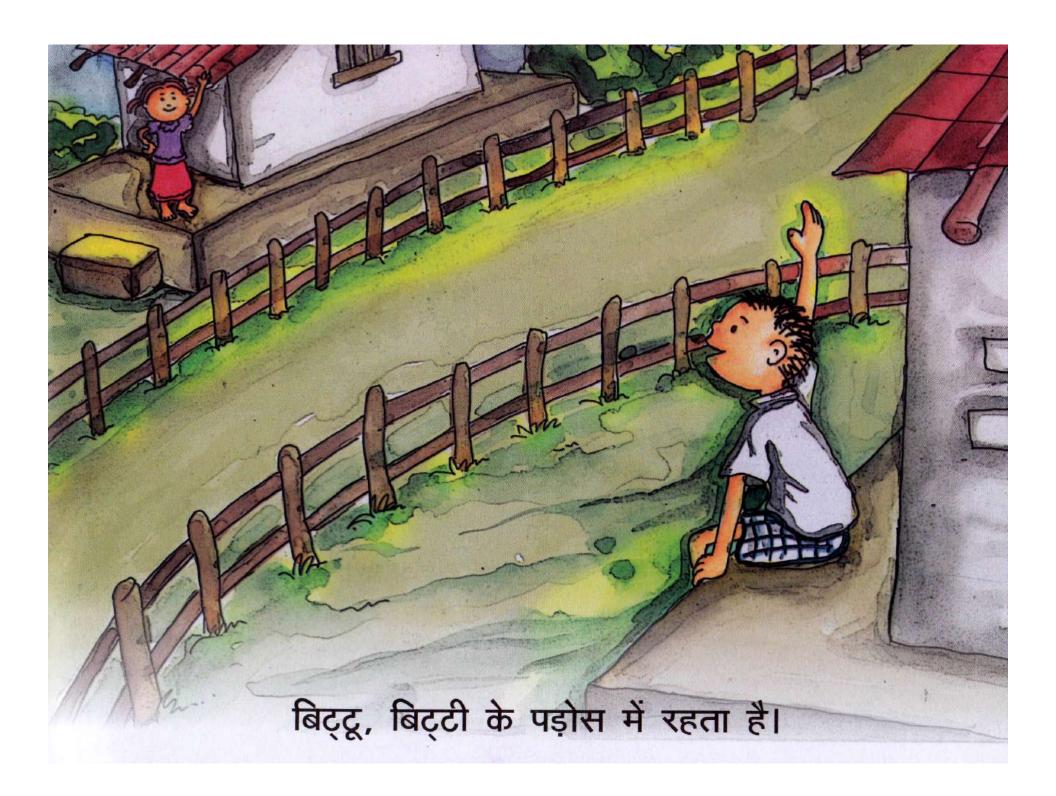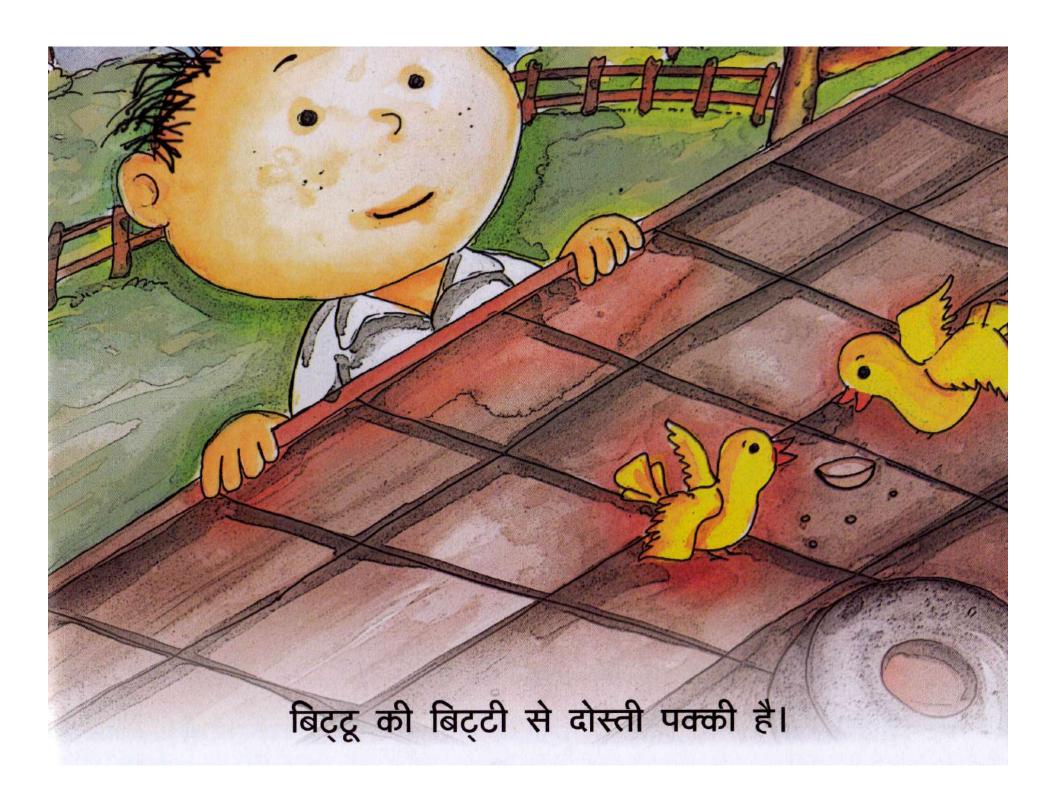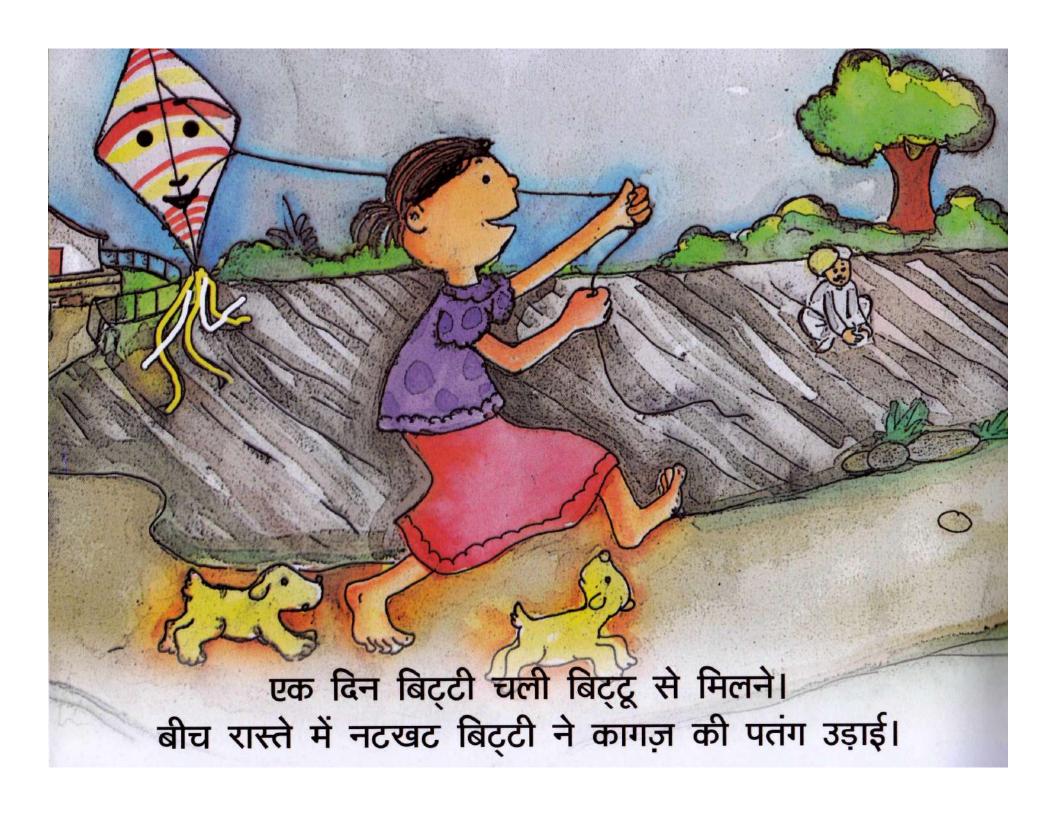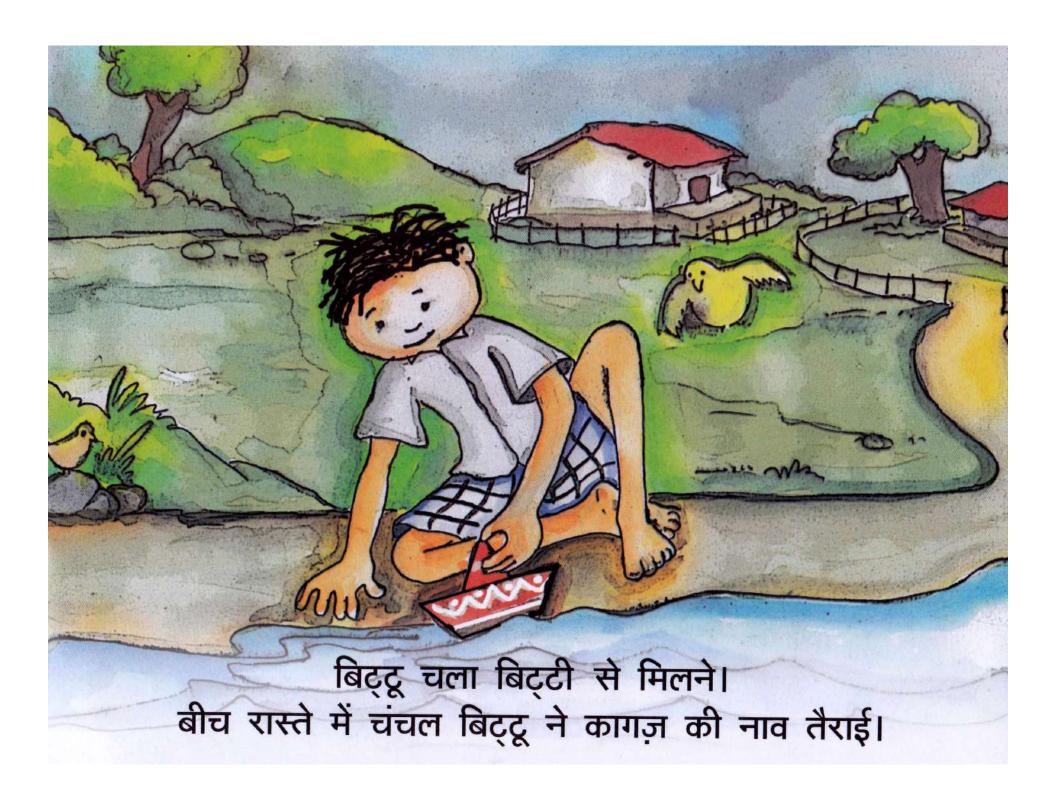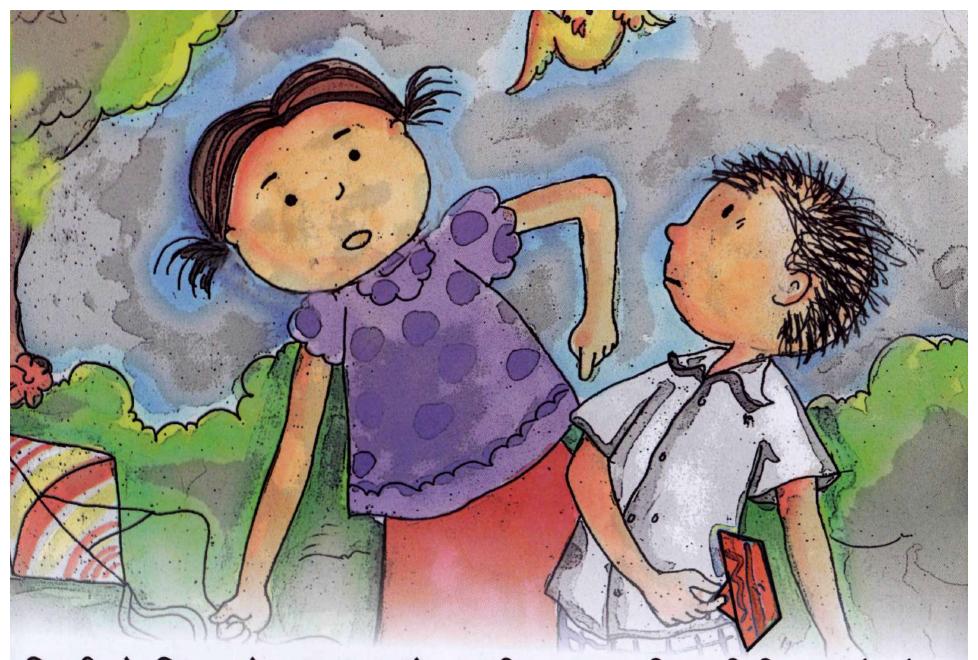
बिट्टी ने बिट्टू से कहा, "मुझे अपनी कागज़ की सजीली नाव दे दो।"

बिट्टू ने बिट्टी से कहा, "मुझे अपनी कागज़ की रंगीली पतंग दे दो।"

बिट्टी बिट्टू की सजीली नाव छीनकर तैराने भागी।

बिट्टू बिट्टी की रंगीली पतंग छुड़ाकर उड़ाने भागा।

अपनी पतंग छुड़ाने, बिट्टी ने बिट्टू का रास्ता रोका।

अपनी नाव छीनने बिट्टू ने बिट्टी का रास्ता रोका।
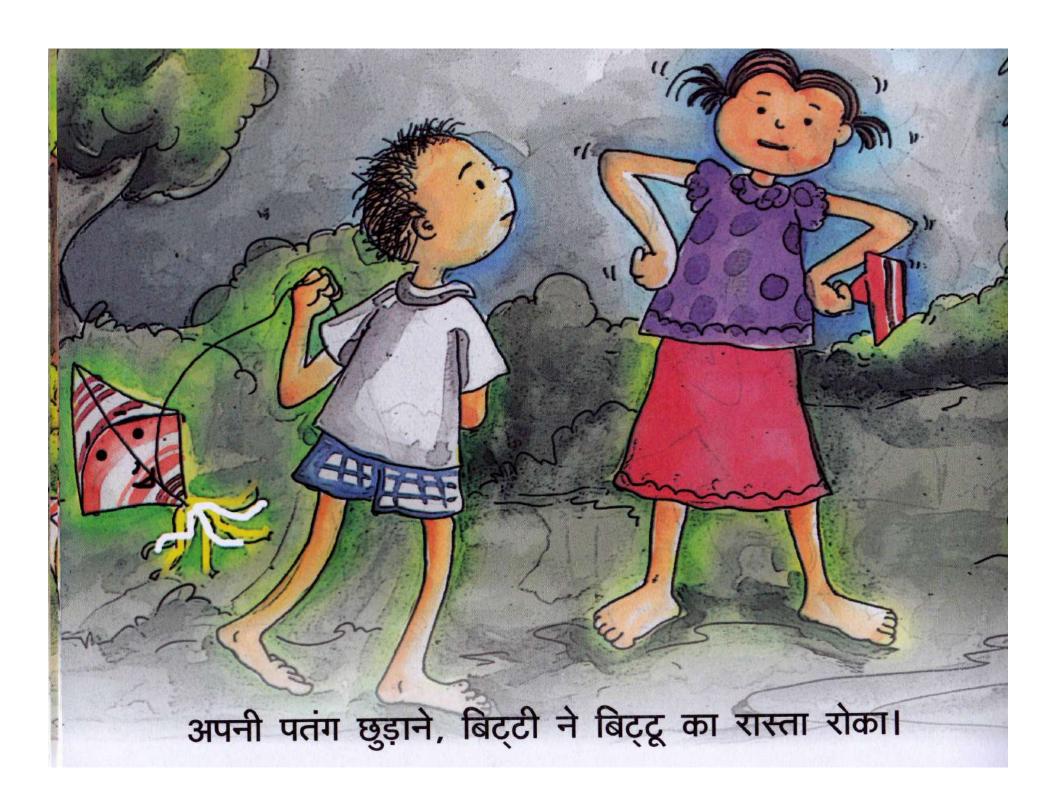
बिट्टी ने बिट्टू से कहा, "तुम मेरी पतंग वापिस कर दो।"
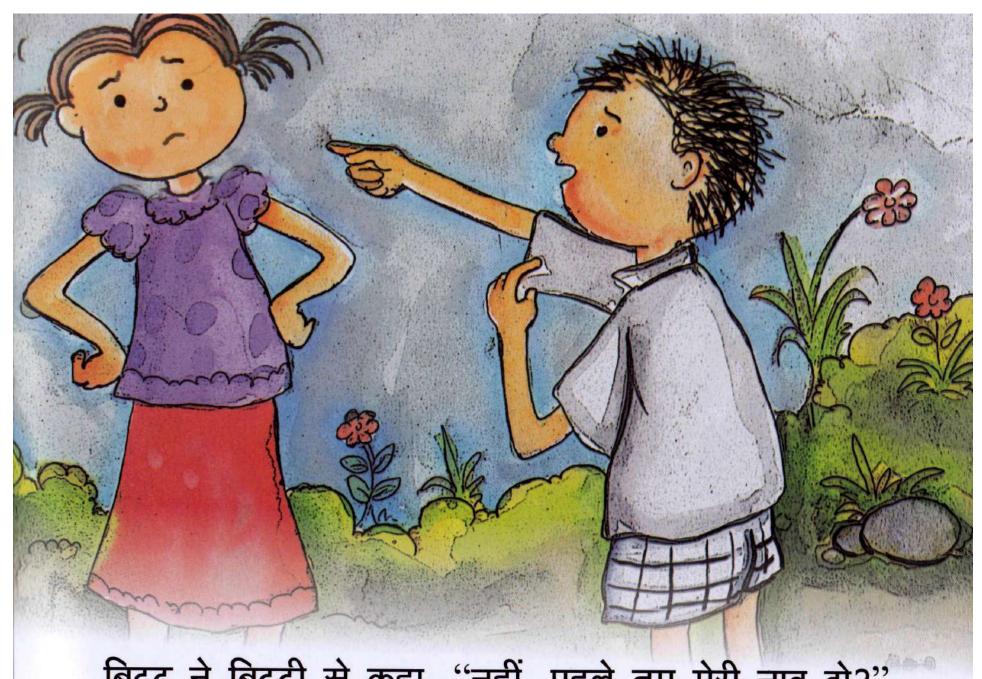
बिट्टू ने बिट्टी से कहा, “नहीं, पहले तुम मेरी नाव दो?”

अगले दिन बिट्टू मिला बिट्टी से........... दे ताली।

और बिट्टी मिली बिट्टू से............ दे ताली।

पारुल बत्रा

बचपन से ही खूब पढ़ा-लिखा और चित्र बनाए। कई रचनाएँ, चित्र और फोटोग्राफ *शैक्षिक पलाश, चकमक, अनौपचारिका* व कई अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित। बच्चों के लिए विभिन्न विधाओं में लिखी गई नई-पुरानी श्रेष्ठ रचनाओं को खोजना और पढ़ना अच्छा लगता है। फिलहाल रूम टू रीड के पुस्तकालय कार्यक्रम के विस्तार में जुटी हैं।

शिवेन्द्र पाण्डिया

शौकिया चित्र बनाते-बनाते कब पेशेवर आर्टिस्ट बन गए पता ही नहीं चला। स्कूल के समय से ही देश की मुख्य पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल में आर्टिस्ट के पद पर कार्य किया। 2001 से अब तक स्वतंत्र काम करते हैं। कविता, कहानी और अन्य रचनाओं के चित्रांकन और **चित्रों की भाषा** के ज़रिए नए अर्थ देने के सृजनशील काम से खुशी मिलती है।

ISBN: 978-81-89976-99-6
9 788189 976996

एकलव्य

मूल्यः ₹ 40.00
A0163H